जुलाई 2024

दादावाणी

Retail Price ₹ 20

जब कर्मों का उदय एक साथ
आता है न, तब घुटन होती है,
तब 'दादा भगवान के असीम
जय जयकार' बोलो।
एक घंटा बुलवाएँगे न तो
सारी घुटन एकदम से दूर हो जाएगी।
इससे चिंता नहीं होगी।
निरंतर समाधि रहती है इस मार्ग पर।
आधि-व्याधि-उपाधि से
मुक्त करता है यह!

सूरत ता. 9 से 12 मई 2024

पूज्यश्री दीपकभाई के 72वें जन्मदिन का महोत्सव

केक कटिंग

नाटक

महात्माओं का आशीर्वाद लेते हुए पूज्यश्री

सत्संग-ज्ञानविधि

इन्फोर्मल सत्संग

दर्शन

सूरत त्रिमंदिर का खातमुहूर्त : ता.17 मई 2024

माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्रभाई पटेल
पूज्यश्री का आशीर्वाद लेते हुए

वर्ष : 19 अंक : 9
अखंड क्रमांक : 225
जुलाई 2024
पृष्ठ - 28

Editor : Dimple Mehta
© 2024
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Multiprint
Opp. H B Kapadiya New High School, At-Chhatral, Tal: Kalol, Dist. Gandhinagar - 382729

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
5 साल
भारत : 1000 रुपये
वार्षिक
भारत : 200 रुपये
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

असीम जयकारा : कैश बैंक ऑफ डिवाइन सॉल्यूशन

संपादकीय

इस पंचम आरे में पूरा जगत् त्रिविध ताप से जल रहा है! आधि-व्याधि-*उपाधि* (परेशानी) में फँसा हुआ है। किसी को शारीरिक व्याधि, तो किसी को मानसिक आधि तो किसी को बाहर से आयी हुई *उपाधि* ! क्या इस काल में संसार में कोई मुश्किल-अड़चन के बगैर हो सकता है? चारों ओर से टेन्शन-चिंता, ऐसे इस काल में अक्रम विज्ञानी दादा भगवान (दादाश्री) कहते हैं कि 1958 में हमें ज्ञान हुआ तभी से मैं मुक्त ही हूँ, विदाउट टेन्शन या दु:ख! और साथ ही गारन्टी देते हैं कि आपके तमाम दु:ख-परेशानियाँ लेने के लिए मैं आया हूँ, हमें सौंप देना और सुख आपके पास रहने देना।

ज्ञान मिलने के बाद स्वरूप की जागृति के लिए और संसार में व्यवहार पूर्ण करने के लिए पाँच आज्ञा ही मुख्य हैं, किंतु कर्मों की आँधियाँ आती हैं तब बुद्धि पाँच आज्ञा का पालन नहीं करने देती, तब कर्मों की उलझनों में खुद उलझ जाता है। ऐसे समय में दादाश्री कहते हैं कि सांसारिक अड़चनों के समय 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' बोलना, तो सभी परेशानियाँ उसके घर चली जाएगी, आवरण टूटते जाएँगे और अंत:करण शुद्ध होता जाएगा। एक घंटा बुलवाएँगे तो सारी उलझनें फटाफट चली जाएगी और कषाय खत्म हो जाएँगे। फेमिली में सभी साथ मिलकर करेंगे तो हमेशा के लिए शांति हो जाएगी और बच्चों में संस्कार सिंचन होगा।

प्रस्तुत अंक में, 'दादा भगवान के असीम जय जयकार' का महत्व समझाते हुए दादाश्री कहते हैं कि हम जो कीर्तन करते हैं, वह ज्ञानी पुरुष के अंदर प्रकट हुए दादा भगवान की कीर्तनभक्ति करते हैं। हमारे भीतर जो प्रकट हुए हैं, वे ही 'दादा भगवान' आपके भीतर बैठे हैं। हमारे भीतर प्रकट हो चुके हैं, जबकि आपके भीतर प्रकट होना बाकी है। आप खुद ही भगवान हो, आपको उसका भान हो जाए तो फिर सारा हल आ जाएगा। 'दादा भगवान के असीम जय जयकार' बोलते हैं, वह वैज्ञानिक ही है, क्योंकि इस जगत् में ऐसी कोई चीज़ नहीं है कि शब्द बोलने से ही इतना जबरदस्त आनंद हो जाए। यह बोलने से खुद जाग्रत होकर खुद के भीतर बैठे हुए भगवान की स्वरूप कीर्तनभक्ति होती है। 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो', यह सिन्सियरिटी सहित बोलना, वह सबसे बड़ा पुरुषार्थ है।

इस दुषमकाल में परेशानी तो आती ही रहेगी, ऐसे समय में दादाश्री हिम्मत देते हुए महात्माओं से कहते हैं कि दादाई बैंक खुला है, अत: 'दादा' की कृपा से मन के, वाणी के, देह के रोगों के सभी प्रकार के दु:खों का-अंतरायों का अंत आ जाएगा। यह ज्ञान और दादा भगवान की कीर्तनभक्ति से संसार और मोक्ष का सारा काम पूर्ण हो जाएगा। महात्माओं के लिए कठिन समय में 'दादा भगवान के असीम जय जयकार' यह एक मात्र नक़द साधन है, 'दिस इज़ द कैश बैंक ऑफ डिवाइन सॉल्यूशन'!

जय सच्चिदानंद

असीम जयकारा : कैश बैंक ऑफ डिवाइन सॉल्यूशन

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

चिंता-वरीज़, वहाँ पकड़ ली रोंग बिलीफें

प्रश्नकर्ता : दिमाग़ में आजकल टेन्शन रहा करता है।

दादाश्री : टेन्शन में सभी तरह के तनाव रहते हैं। नौकरी का ठिकाना नहीं पड़ रहा, क्या होगा? एक तरफ पत्नी बीमार है, उसका क्या होगा? लड़का ठीक से स्कूल नहीं जाता, उसका क्या? इन सभी तनाव, इसे टेन्शन कहते हैं। टेन्शन हो जाए तो दिमाग़ बिगड़ जाता है। कभी न कभी टेन्शन रहित होना है।

प्रश्नकर्ता : अंदर ऐसा पता चलता है कि यह गलत हो रहा है, दिमाग़ पर गलत टेन्शन है, इससे तबियत और ज़्यादा खराब होगी। ऐसी जागृति रहा करती है, लेकिन फिर वापस कन्टिन्युअस (निरंतर) रहता है।

दादाश्री : तेरी बुद्धि ज़रा ज़्यादा काम करती है, इसलिए हम तुझे कहते हैं। बहुत सचेत रहने जैसा है। वह टेन्शन तो खत्म कर देता है। (लेकिन) ऐसा ज्ञान मिला है, वह भी फिर चला जाएगा। बाद में फिर कोई ताल नहीं बैठेगा।

टेन्शन मनुष्य को खत्म कर देता है और यदि यह ज्ञान नहीं हो तो टेन्शन ही है सारा। जगत् व्यथित ही है न!

यानी समझने की ही ज़रूरत है। भूतकाल तो चला गया और वर्तमान में रहना है। वर्तमान में रह सकते हैं या नहीं रह सकते? हम वर्तमान में ही रहते हैं। इसीलिए लोग कहते हैं, 'दादा, आप टेन्शन रहित हैं!' मैंने कहा, टेन्शन किस चीज़ का भाई?' वर्तमान में रहे तो टेन्शन होगा क्या? टेन्शन तो, जो भूतकाल में खो जाता है उसे होता है। भविष्य का पागलपन करे, उसे होता है, हमें क्या टेन्शन? और मैंने आपको वही पद दिया है।

हमने जिन्हें ज्ञान दिया है, उन्हें तो निरंतर समाधि रहती है। जिन्हें शुद्धात्मा पद प्राप्त है, जो निरंतर स्वरूप में ही रहते हैं, उन्हें तो हर अवस्था में समाधि रहती है, क्योंकि वे तो प्रत्येक अवस्था को देखते हैं और जानते हैं।

प्रश्नकर्ता : हाँ, ठीक है, तब भी चिंता में और सिर्फ चिंता में ही डूबा रहता हूँ।

दादाश्री : तो उसका हल तो लाना पड़ेगा न? इन रोंग बिलीफों को कब तक पकड़कर रखोगे? अब अगर वरीज़ (चिंता) चखी हों न, तभी वास्तव में इस जगत् का स्वाद पता चलता है, वर्ना तब तक इस जगत् का स्वाद समझ में नहीं आता। निरी वरीज़, वरीज़, वरीज़! जैसे मछलियाँ तेल में तली जाती हैं वैसी छटपटाहट हो रही है! इसे लाइफ (जीवन) कैसे कहेंगे?

होम डिपार्टमेन्ट में असर नहीं करती आँधियाँ

प्रश्नकर्ता : दादा, अभी तो कर्मों की आँधी जैसी आई है।

दादाश्री : आँधियाँ आएँगी। फिर जब आँधी चली जाएगी, उसके बाद सेफसाइड। मतलब आँधी सब के यहाँ आती है। ये तो बीच में ज़रा आँधी आए तो दरवाज़े बंद करके बैठे रहना। लेकिन दो घंटे के बाद आँधी बंद होने पर, फिर दरवाज़े खोल देते हैं। इसी तरह आपके यहाँ आँधी आए, तो एक दिन-दो दिन तो आप दरवाज़े बंद करके अंदर होम डिपार्टमेन्ट (आत्म स्वरूप में) में बैठे रहना। और बाहर चंचलता होती रहेगी, उसे देखते रहना। क्या ऐसा नहीं हो सकता?

प्रश्नकर्ता : यानी हमें धीरज रखनी है, समता रखनी है।

दादाश्री : आपको देखते रहना है और समभाव से *निकाल* (निपटारा) करना है और उसे फाइल कहा जाता है, जो आँधी आई है उसे। समभाव से *निकाल* करना तो फिर चला जाएगा। और जितना हिसाब में है, उतना ही आएगा, दूसरा नहीं आएगा।

यह क्या कोई गप्प है यहाँ पर? यह तो वैज्ञानिक है! यहाँ तो किसी का भी दखल नहीं चलता। भगवान का भी दखल नहीं चलता इसमें। वैज्ञानिक थ्योरी में भगवान का दखल कैसे चल सकता है?

अपने घर में बैठे हैं, तो है कोई चिंता?

यानी ऐसा कहा है कि 'चिंता क्यों करते हो बिना बात के?' आपको तो सिर्फ क्या करना है? सहज भाव से विचार करने हैं। और विचार अबनोर्मल (ज़रूरत से ज़्यादा) हो जाए तो उसे चिंता कहा जाएगा। विचारों में अबनोर्मल हो जाए तब चिंता होती है, वहाँ पर बंद कर देना है आपको, क्लोज़ (बंद) कर देना है। जैसे बहुत आँधी आ रही हो तो हम दरवाज़ें बंद कर देते हैं न, उसी तरह अंदर विचार अबनोर्मली आगे बढ़े तो बंद कर देना है। नहीं तो फिर वे चिंता का रूप ले लेंगे। फिर तरह-तरह के भय दिखाएँगे और तरह-तरह का दिखाएँगे। अत: उस दिशा में जाना ही नहीं है। आपको ज़रूरत अनुसार विचार करने हैं, बाकी बंद।

प्रश्नकर्ता : विचार बंद करने की सत्ता है क्या?

दादाश्री : है न! सभी कुछ है। क्योंकि विचार तो आते रहते हैं। हम इस तरफ देखते रहे और दूसरी तरफ वे फूटते रहेंगे। हम दृष्टि दूसरी तरफ फेर लें तो हमें क्या लेना-देना? सारी सत्ता है। यदि नल बंद नहीं हो रहा हो तब हम दूसरी तरफ देखें तो नल बंद हो ही गया न! जब तक उसे देखें, तभी तक ऐसा लगता है कि नल चल रहा है। अर्थात् हम तो ज्ञाता-द्रष्टा हो गए इसलिए अब मन तो हमारा रहा ही नहीं न! मन तो ज्ञेय है, वह तो कैसे भी फूटे।

यह किसके जैसा है? यदि आप अन्य किसी के घर में घुस गए हों, तो भीतर घबराहट रहती है कि नहीं? रहती ही है। 'अभी कोई निकाल बाहर करेगा, धमकाएगा', ऐसा निरंतर रहा ही करता है। पर यदि अपने ही घर में बैठे हैं, तो है कोई चिंता? शांति ही होगी न अपने घर में तो, वैसा ही है यह। चंदूलाल, वह आपका घर नहीं हो सकता। आप खुद क्षेत्रज्ञ पुरुष हैं और भ्रांति से पराये क्षेत्र में क्षेत्राकार हो गए हैं। 'पर' के स्वामी हो बैठे हैं और ऊपर से, पर के भोक्ता हो बैठे हैं। इसलिए निरंतर चिंता, *उपाधि*, आकुलता और व्याकुलता रहा करती है। पानी से बाहर निकाली गई मछली की तरह निरंतर छटपटाहट, छटपटाहट रहती है।

अपने हिसाब का जगत्, वहाँ क्या चिंता?

भगवान कहते हैं कि चिंता करने वाले के लिए दो दंड हैं और चिंता नहीं करने वाले के लिए एक दंड है। अट्ठारह वर्ष का एकलौता जवान बेटा मर जाए तो उसके बाद जितनी चिंता करते हैं, जितना दु:ख मनाते हैं, सिर फोड़ते हैं, और जो कुछ भी करते हैं, उनको दो दंड हैं और जो ये सब नहीं करते, उनके लिए एक ही दंड है। बेटा मर गया, उतना ही दंड है और सिर फोड़ा, वह अतिरिक्त दंड है। हम ऐसे दो तरह के दंड में कभी भी नहीं आते। इसलिए मैंने इन लोगों से कहा है कि, ''पाँच हज़ार रुपये की जेब कट जाए तब 'व्यवस्थित' कहकर आगे निकल जाना और चैन से घर चले जाना।''

यह एक दंड तो अपना खुद का ही हिसाब है। इसलिए घबराने का कोई कारण नहीं है। इसलिए मैंने 'व्यवस्थित' कहा है, एक्ज़ेक्ट 'व्यवस्थित' है। इसलिए, जो हो चुका है उसे तो ठीक है, करेक्ट है, ऐसा ही कहना।

तू खुद ही भगवान है, वहाँ कैसी चिंता?

ज्ञान किसे कहते हैं? संसार में रहे, बेटों की शादी करें, बेटियों की शादी करें, व्यापार करें, परंतु माया का असर न हो और चिंता न हो, उसे ज्ञान कहते हैं। जहाँ त्रिविध ताप हैं, वहाँ वह भगवान से लाखों मील दूर है। आधि-व्याधि और *उपाधि* के ताप में जो जल रहा है, वह तो भगवान का भक्त भी नहीं हुआ है। जिसके वहाँ क्लेश है, वह भगवान का भक्त हुआ ही नहीं है। मानने में आता है या नहीं आता?

प्रश्नकर्ता : हाँ न!

दादाश्री : त्रिविध ताप हों तब तक भगवान का भक्त कहा जाएगा क्या? आधि-व्याधि और *उपाधि* के ताप जिसे लग रहे हों, वह भगवान का भक्त कैसे कहा जाएगा? जब तक आधि-व्याधि और *उपाधि* है, तब तक भक्ति कैसे कर पाएगा? अत: वह दयनीय स्थिति है! इतने सारे दर्शन किए, इतनी सारी भक्ति की फिर भी भीतर आधि-व्याधि और *उपाधि,* देखो दु:ख, दुख और दु:ख! जगत् में खलबली मची है इससे, पेट्रोल की आग से खलबली मच गई है।

कोई बाप भी आपका *ऊपरी* (बॉस) नहीं है। कोई *ऊपरी* ही नहीं है, कोई बोस नहीं। बगैर बात के डरता रहता है। अरे, भगवान भी तेरा *ऊपरी* नहीं है। तू खुद ही भगवान है, लेकिन उसका भान होना चाहिए। बात को सिर्फ समझना ही है। चिंता क्यों करते हो? यह संसार एक क्षण भर भी चिंता करने जैसा नहीं है।

इस जगत् में कोई भी ऐसा कारण नहीं है, कि जो किंचित्मात्र भी क्लेश करने योग्य हो। मतलब अंदर दु:ख परिणाम हो ऐसा कोई कारण नहीं है। क्योंकि आत्मा खुद सुख परिणाम वाला है! खुद आत्मा है, कोई उसका सुख ले सके, ऐसा भी नहीं है, अव्याबाध स्वरूप है। ऐश्वर्य है खुद के पास और इन बाहरी चीज़ों में, 'फॉरेन डिपार्टमेन्ट में' इतना ज़्यादा नहीं रखना चाहिए आपको। फॉरेन मतलब फॉरेन, वहाँ सुपरफ्लुअस रहना है!

भगवान तो जो अंदर बैठे हैं, वे हैं। वास्तविक 'थ्योरी' तो, जो अंदर बैठे हैं, वे ही भगवान हैं। उन्हीं का नाम 'शुद्धात्मा'। उन्हें कोई भी नाम दो, लेकिन अंदर बैठे हुए की ही खोज करें तब काम होगा।

सभी महात्मा भगवान होंगे एक दिन

आप खुद भी भगवान हो, लेकिन आपको उसका *भान* (अनुभूति) नहीं है। खुद के मन में ऐसा तय हो जाए कि, 'मैं भगवान हूँ लेकिन मुझे उस पद का पता नहीं चल पा रहा है।' ऐसा यदि तय हो जाए तब तो फिर हर्ज नहीं है। यह तो इसे शंका है कि, 'हूँ या नहीं, हूँ या नहीं, हूँ या नहीं...' शंका कैसी? तू भगवान ही है! तुझे तेरा खुद का *भान* चला गया है!

प्रश्नकर्ता : आपने जो कहा कि हम सभी को आप भगवान बनाना चाहते हैं, वह तो जब बनेंगे तब ठीक है। अभी तो नहीं बने हैं न?

दादाश्री : लेकिन ऐसा होगा न, क्योंकि यह अक्रम विज्ञान है! जो बनाने वाला है, वह निमित्त है और बनने की जिसे इच्छा है, जब ये दोनों इकट्ठे होते रहेंगे, तो वैसा होगा ही! बनाने वाला क्लियर है और अपना क्लियर है, अपनी और कुछ नीयत नहीं है, अत: एक दिन सारे अंतराय टूट जाएँगे और भगवान बनकर रहेगा, जो कि अपना ही मूल स्वरूप है!

आज्ञा के प्रति सिन्सियर रहकर, काम निकाल लो

आपके भीतर 'दादा भगवान' बैठे हैं, वे ही चेतन प्रभु हैं, वे ही परमात्मा हैं। वे ही हमारे भीतर प्रकट हुए हैं और आप में प्रकट होने बाकी हैं। यह तो धर्म नहीं है, यहाँ तो काम निकाल लेना है। कब तक धर्मशालाओं में बैठे रहेंगे?

प्रश्नकर्ता : दादा, आप हमेशा कहते हैं कि, 'अपना काम निकाल लो, अपना काम निकाल लो।' तो हमें अपना काम कैसे निकाल लेना है?

दादाश्री : काम निकाल लो अर्थात् हम जो बताते हैं न, उस अनुसार ही चलो। काम निकाल लो अर्थात् क्या कहना चाहते हैं हम? हम ऐसा नहीं कहते कि आप आज्ञा का पूरा पालन करो। मैं रोज़ ऐसा नहीं गाता रहता। लेकिन काम निकाल लो यानी आापको समझ लेना है कि, 'हमें और ज़्यादा आज्ञा पालन करने को कह रहे हैं, आज्ञा में जाग्रत रहने को कह रहे हैं। हमारी आज्ञा के प्रति सिन्सियर रहना, वह तो बहुत बड़ा मुख्य गुण कहलाता है। हमारी आज्ञा से जो अबुध हुआ वह हमारे जैसा ही हो जाएगा न! लेकिन जब तक आज्ञा का सेवन करता है, तब तक आज्ञा में बदलाव नहीं होना चाहिए, तो परेशानी नहीं आएगी।

ज्ञान से आज्ञा पालन करे तो सर्वत्र परिणाम प्राप्त होता ही है और बुद्धि से आज्ञा पालन करे तो कोई परिणाम प्राप्त नहीं होता।

बोलते ही, अंत:करण शुद्ध होता जाता है

प्रश्नकर्ता : यह बुद्धि जो हमें सहज नहीं होने देती, उसे शुद्ध करने के लिए पाँच आज्ञा के अलावा अन्य कोई साधन है क्या?

दादाश्री : यदि यहाँ पर सभी डॉक्टरों को इकट्ठा करे तो वे 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' बोलेंगे क्या? कितने बोलेंगे? एक भी नहीं बोलेगा। बुद्धि घुस गई है न, इसलिए शुक्ल अंत:करण खत्म हो गया!

प्रश्नकर्ता : अर्थात् बौद्धिक परिग्रह बढ़े, बुद्धि बढ़ी इसलिए?

दादाश्री : हाँ, इसलिए सहज होने की ज़रूरत है। यदि बुद्धि ज़रा सी भी बढ़ी तो शुक्ल अंत:करण खत्म हो जाता है। साथ में फिर प्रतिक्रमण भी करना चाहिए कि 'मुझसे बोला

नहीं जाता। कितने दिनों से मुझे यह बोलने के इच्छा है, तो मेरे यह अंतराय दूर कीजिए।' ऐसा करते-करते सब ठीक हो जाएगा और अच्छी तरह से बोला जाएगा। तन्मयाकार होकर अच्छी तरह से बोला जाएगा।

खुद अलग हो गया यानी कि खुद को अपने आप से अलग कर लिया और फिर 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' गाने में तन्मयाकार हो गया तो मन में जो विचार आ रहे हों, वे भी बंद हो जाएँगे! अंत:करण शुद्ध होता जाएगा।

जब कर्मों का उदय एक साथ आता है न, तब घुटन होती है, तब 'दादा भगवान के असीम जय जयकार' बोलो। एक घंटा बुलवाएँगे न तो सारी घुटन एकदम से दूर हो जाएगी। इससे चिंता नहीं होगी। निरंतर समाधि रहती है इस मार्ग पर। आधि-व्याधि-*उपाधि* से मुक्त करता है, यह अंतिम स्टेशन!

प्रश्नकर्ता : अर्थात् पढ़ाई करने से बुद्धि बढ़ी है न? तो उस हिसाब से तो अनपढ़ रहना अच्छा है?

दादाश्री : अब लोगों को यह कैसे पता चलेगा? कृपालुदेव ने इतना ही कहा कि शुक्ल अंत:करण, लेकिन शुक्ल अंत:करण किसे कहेंगे, वह किस तरह से समझ में आएगा? मोक्षमार्ग पूरा हार्टिली मार्ग है। हम में एक परसेन्ट भी बुद्धि नहीं है, तभी तो पूरा मोक्षमार्ग खुला हुआ है न!

कचरा भरकर लाए हैं, तो क्या हो सकता है?

प्रश्नकर्ता : दादा, आपकी यह फिलोसॉफी (तत्त्वज्ञान) और टीचिंग सब अच्छा लगता है, जो आप सिखाते हैं, वह ज्ञान अच्छा लगता है लेकिन यह 'दादा भगवान के असीम जय-जयकार' बोलना अच्छा नहीं लगता, तो क्या करूँ? खुद को 'दादा भगवान' के लिए कुछ नहीं है लेकिन यह 'दादा भगवान के असीम जय-जयकार' गाना, वह काम का नहीं लगता, तो वह क्या है, दादा?

दादाश्री : उसे बंद रखना आप। जो आपको पसंद न हो उसे बंद रखना। लोगों को तो बहुत पसंद है। लेकिन अब आपके अंदर का माल कच्चा हो, अलग प्रकार का, तो क्या हो सकता है? कचरा भरकर लाए हो, तो क्या हो सकता है?

प्रश्नकर्ता : दादा, आपका ज्ञान मुझे पसंद है। आप जो ज्ञान देते हो टीचिंग करवाते हो, आपकी आज्ञा पसंद हैं, लेकिन....

दादाश्री : नहीं, लेकिन यह ऐसा है न कि शुद्ध नहीं है। सबको अच्छा लगे, वह आपको भी अच्छा लगे तब समझना कि यह शुद्ध माल है। और ऐसा अच्छा नहीं लगे, खुद एक्सेप्शन, अपवाद, तब समझना कि यह शुद्ध माल नहीं है। माल प्योर नहीं है कम्प्लीट, दाग़ वाला माल है।

'इसे' हृदय ही पहचान सकता है

अब, छोटा बच्चा कोई चीज़ नहीं बोलता। चाहे कोई भी मंत्र दो, फिर भी नहीं बोलता। क्योंकि, उसे स्वाद (रस) ही नहीं आता न! भीतर फायदा ही नहीं होता न! और यह 'असीम जय जयकार' बोले तो उसमें तुरंत अमृतरस टपकता है। छोटे बच्चों को तो बहुत अच्छा अनुभव होता है। हम गाँव जाते हैं न, तो छोटे बच्चे तो पेट पकड़कर बोलते रहते हैं। क्योंकि सच्ची चीज़ को पकड़ने के लिए बच्चे जल्दी समझ जाते हैं और झूठी चीज़ों को बुद्धिशाली पकड़ लेते हैं। बड़ी उम्र वाले बुद्धि का उपयोग करते हैं उससे

वापस ज़रा बिगड़ जाता है। बच्चों में बुद्धि नहीं है न, इसलिए सच्ची चीज़ का उन्हें हृदय से पता चल जाता है। हार्ट पर कैसा असर होता है, वह असर को बच्चे समझ जाते हैं और बुद्धि हार्ट पर होने वाले असर को देखने (समझने) नहीं देती।

इसलिए हर जगह छोटे बच्चे भी बोलते हैं। उन बच्चों से कहें कि, 'छोड़ दो, अब रहने दो' तो उन्हें अच्छा नहीं लगता। क्योंकि यह शुद्ध नाम है। इसे छोटे बच्चे बहुत अच्छे से समझ जाते हैं, जिनमें बुद्धि नहीं हैं, वे बहुत अच्छे से समझ जाते हैं। फिर छोड़ते ही नहीं।

पुण्योदय से प्राप्त भक्ति

ज्ञानी पुरुष में प्रत्यक्ष प्रकट हैं, इसलिए मैं कहता हूँ न, कि मैं भी बोलता हूँ और आप भी बोलना, यदि समझ में आ जाए तो। पाप का उदय हो तो आपको बोलना हो तब भी बोल नहीं पाते। पाप घेर लें तब कैसे बोल पाएगा बेचारा?

प्रश्नकर्ता : तो पाप का उदय कब कहा जाता है?

दादाश्री : खुद को बोलना हो और भीतर से न बोलने दे, तब पाप का उदय कहा जाता है और पुण्य का उदय हो तो आपकी बोलने की इच्छा हो तब तुरंत ही बोल पाते हैं। आपकी इच्छानुसार सबकुछ हो, उसे पुण्य का उदय कहा जाता है और इच्छानुसार न हो, उसे पाप का उदय कहा जाता है। लोगों को दुःख देने से पाप बंधता है और लोगों को सुख देने से पुण्य बंधता है। सुख देने से बैंक में क्रेडिट होता है और दुःख देने से बैंक में डेबिट होता है। फिर दो पैर से चार पैर में जाकर चुकता करना पड़ता है, भैंस बनकर, बैल बनकर, घोड़ा बनकर चुकता करना पड़ता है।

प्रश्नकर्ता : किसी को समझ में नहीं आता तो नहीं बोलता, तो क्या उसके साथ उसका पाप का संबंध है?

दादाश्री : नहीं, उसे नुकसान नहीं होता। उसे फायदा नहीं और नुकसान नहीं! उसे क्या लेना-देना? नहीं बोलता, वह कोई गुनाह नहीं है, लेकिन जो बोलता है उसे फायदा होता है।

प्रश्नकर्ता : इच्छा हो और बोल न पाए, वह अंतरायकर्म है क्या?

दादाश्री : इच्छा हो और बोल न पाए, वह अंतरायकर्म कहलाता है।

दादा के पास बुद्धि की बोलती बंद

एक व्यक्ति के ऑफिस में से पाँच-सात लोगों ने ज्ञान लिया था। वे लोग वहाँ पर ऑफ़िस में 'दादा भगवान, दादा भगवान' उनकी सभी स्तवना करते रहते थे, ऐसी कीर्तनभक्ति करते रहते थे। इससे दूसरे एक व्यक्ति को दिमाग़ का पारा चढ़ गया। वह उनकी ऑफिस का था। उसे ऐसा लगा कि ये लोग क्या 'दादा, दादा' करते रहते हैं? ये लोग क्या समझते हैं? तो फिर उसने इन लोगों से कहा कि, 'एक बार मैं आपके दादाजी के पास आऊँगा। मुझे उनकी परीक्षा लेनी है।' क्या कहने लगा कि दादाजी को सीधा करना है! वह व्यक्ति मुझसे लड़ना चाहता था। उस व्यक्ति को बहुत गुस्सा आ गया था कि ये बड़े 'दादा भगवान' हैं, मुझे उनको सीधा कर देना है। उसके ऑफिस के लोगों ने मुझसे कहा कि, 'यह व्यक्ति हमारे पीछे पड़ा है। उसे भी यहाँ आना है।' मैंने कहा, 'आने दो न! क्या हर्ज है?' गाली दे उसका भी यहाँ स्वागत है और फूल चढ़ाए उसका भी स्वागत है। मुझे किसी के साथ जुदाई नहीं है। क्योंकि, मैं

गाली देने वाले को नहीं देखता। गाली देने वाले के भीतर 'कौन है', उसे मैं देखता हूँ। मैं अतत्त्व को नहीं देखता। मुझे अतत्त्व से क्या काम है? गधा भी अतत्त्व ही है और यह भी अतत्त्व है। मैं तो उनमें तत्त्व को ढूँढ़ता हूँ। फिर मैंने कहा, 'बुलवाओ उसे!'

फिर छुट्टी के दिन वह व्यक्ति हमारे यहाँ आया। उसके ऑफिस के सब लोग भी साथ में आए, कि देखते हैं अब क्या होता है, वह दादाजी को सीधा करता है या दादाजी उसे सीधा करते हैं! मेरे आने से पहले वह आकर बैठ गया। सत्संग में दूसरे लोग भी इकट्ठे हुए थे, तो उनके साथ जबान लड़ाने लगा, सारी बुद्धि की बातें। अब बुद्धि की बातों का तो अंत ही नहीं आता। लेकिन हम तो अंत ला देते हैं। जब बुद्धि की बातें चल रही थी तब मैं आया। मुझे उस बात का पता नहीं था कि यहाँ पर ये व्यक्ति ऐसा दख़ल कर रहा है। मुझे ये भी पता नहीं था कि मेरे दिमाग़ का पारा उतारने आया है। फिर मैंने सभी से पूछा कि 'आज क्यों कोई सत्संग नहीं कर रहा है? कोई सत्संग करो न! बोलो न!' वह भाई साहब नये लगे इसलिए मैंने उनसे कहा कि, 'आप बोलो, कुछ बोलो न, क्या हर्ज है?' तब वह कहने लगा कि, 'सच कहूँ, गले तक आ रहा है लेकिन शब्द बाहर नहीं निकल रहा है।' मैं समझ गया कि ये दादा के साथ गुनाह में आ गया है, हराने आया है। इसलिए गले से शब्द नहीं निकलेगा, भीतर से एक शब्द भी नहीं निकलेगा। उसने जो *आड़ाई* (टेढ़ापन) की है, उसका यह फल मिला है। मेरे पास आकर वाणी ही बंद हो जाती है। बहुत से लोगों की वाणी बिल्कुल ही बंद हो जाती है, एक शब्द भी नहीं बोल पाते और टेढ़ा व्यक्ति तो मेरे पास आ ही नहीं पाता। वह जब सीढ़ी चढ़ रहा हो, तभी मैं बता देता हूँ कि वह व्यक्ति वापस उतर जाएगा। यहाँ लोग मुझसे पूछते हैं, कई लोगों से कहता हूँ कि प्रश्न क्यों नहीं पूछते? तब कहते हैं, 'घर से निकला तब बहुत सारे प्रश्न पूछने थे, लेकिन यहाँ आने के बाद पूछ नहीं पाता।' दादाजी के पास तो ये बोलती भी बंद हो जाती है! वह भाई साहब आए थे, वह तो घर से तय करके आए थे। मैं आया, उससे पहले ही बातें करने लगा था। वह अपने महात्माओं को तो हरा ही देगा न! देर नहीं लगती न! उनको तो हरा ही देगा न! मुझे भी हरा दें, ऐसा था।

ये भाई वकील हैं। वे कभी यहाँ आए होंगे। उस समय यहाँ पर सब 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो', करके तालियाँ बजा रहे थे, उस समय वे क्या कह रहे थे? 'यह सब क्या चल रहा है? ये सब तालियाँ बजा रहे हैं और ऐसा सब कर रहे हैं?'

अब उनको यह अभिप्राय देने की ज़रूरत ही नहीं थी। ऐसा अभिप्राय दिया इसलिए उन्हें अंतराय आया, देर हुई। यही अंतराय हैं, अपने ही खड़े किए हुए।

भीतर प्रकट भगवान के जयकारा

प्रश्नकर्ता : 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो', क्यों बोलते हैं?

दादाश्री : दादा भगवान तो यह मैं जो दिखाई देता हूँ, वे नहीं हैं! मैं भगवान नहीं हूँ, भगवान तो भीतर प्रकट हुए हैं, वे हैं, चौदह लोक के नाथ हैं! ये जो दिखाई देते हैं ये तो ज्ञानी पुरुष हैं, वर्ल्ड की ऑब्ज़र्वेटरी हैं।

प्रश्नकर्ता : भगवान आपमें ही क्यों प्रकट हुए?

दादाश्री : मैं बहुत समय से इस ओर चल रहा हूँ और आप इस ओर नहीं चलते, इसलिए।

प्रश्नकर्ता : भगवान हृदय में हैं लेकिन वे प्रकट नहीं होते तो उसके लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : माया का प्रेम टूट जाए तो भगवान से प्रेम हो सकता है। दोनों से प्रेम हो तो नहीं हो सकता। आपको भगवान से प्रेम नहीं है, डॉलर से है। एक-एक की नोट गिनने में एकाग्रता रहती है और भगवान में एकाग्रता नहीं रहती। क्योंकि डॉलर पसंद है, भगवान पसंद नहीं है। वहाँ तो वाइफ सामने आ जाए तो उसे भी निकाल देते हैं!

प्रश्नकर्ता : डॉलर और भगवान दोनों साथ में क्यों नहीं रह सकते?

दादाश्री : वे भी रह सकते हैं, परंतु प्रीति भगवान पर रखें तो डॉलर आते हैं। प्रीति भगवान पर ही रखनी है, डॉलर पर नहीं।

संसार की समस्याओं के सामने जयकारा

अब, ज्ञान तो मैंने दिया है, कोई दुःख आपके पास नहीं रहा। फिर भी यदि कमी रहती हो तो ये 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' अमृत रोज़ पिया करो!

प्रश्नकर्ता : हम तो इसे धुन ही समझते हैं।

दादाश्री : नहीं, यह धुन नहीं है। धुन तो असजगता वाले को होती है, उसे धुन कहते हैं। जहाँ एक ही कोने में सजगता होती है! इसे धुन नहीं कहते।

यह ज्ञान तो हम देते हैं, इसका सारा सुख तो बरत रहा था और आपको कोई दुःख नहीं रहा। परंतु यह एक अतिरिक्त आपको मिल रहा है। क्योंकि इस संसार की सारी समस्या रही हैं न, इसलिए यह बोलना है, कि 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो'।

नापसंद में बोलोगे, तब भी फायदा

प्रश्नकर्ता : मुझे यह 'असीम जय जयकार हो' बोलना पसंद नहीं है।

दादाश्री : ऐसा! उसकी वैल्यु (कीमत) समझ में नहीं आई है इसलिए। लोग तो समझते हैं कि यह 'राम-राम' बोलने जैसा बुलवा रहे हैं। कुछ लोगों को तो पहली बार में ऐसा ही समझ में आता है न, नासमझ लोग हैं इसलिए। लेकिन यह ऐसा नहीं है। इसीलिए साथ-साथ मैं ऐसा भी कहता हूँ न कि 'दिस इज़ द कैश बैंक ऑफ डिवाइन सॉल्यूशन!' (दिव्य समाधान का यह नकद बैंक है!)

प्रश्नकर्ता : आपने इतना कुछ कहा फिर भी जाता क्यों नहीं है?

दादाश्री : नहीं जाएगा। आप जाने नहीं देते न!

प्रश्नकर्ता : हमारी तो ऐसी इच्छा है कि सबकुछ निकल जाए।

दादाश्री : आप तो ऐसा कहते हो कि मेरा जाता नहीं है, मुझे पसंद ही नहीं है। यानी 'नापसंद है', ऐसा बोलो तो आप जाने दोगे क्या? 'मुझे पसंद है', ऐसा बोलोगे तो जाएगा। 'पसंद नहीं है' बोलने से तो चढ़ बैठेगा।

प्रश्नकर्ता : और 'नापसंद' हो तब ऐसा थोड़े ही कह सकते हैं कि 'पसंद है!'

दादाश्री : 'पसंद है' कहेंगे तो वह भागने लगेगा न!

प्रश्नकर्ता : अर्थात् 'नापसंद' हो फिर भी ऐसा कहना है कि पसंद है?

दादाश्री : हाँ, तब वह जाने लगेगा न! 'पसंद है', ऐसा साइकॉलोजिकल इफेक्ट हो गया तो फिर हो गया, खत्म हो जाएगा।

आप देखते हो, हमारी पूरी लाइफ में सुबह से शाम तक हम कभी 'नापसंद' कहते हैं? आप देखते हो किसी में भी। 'नापसंद' नहीं दिखता है इसका क्या अर्थ है? तो क्या सबकुछ पसंद होगा? मन तो तकरार करता है कि 'नहीं, वहाँ नहीं, ऐसे।' लेकिन हम उसकी चलने ही नहीं देते न!

'व्यवस्थित' इज़ द करेक्ट (यह सही है)। तेरा नहीं चलेगा।

प्रश्नकर्ता : मन एक तरफ शोर मचाता रहता है कि पसंद नहीं है, पसंद नहीं है।

दादाश्री : लेकिन वह तो शोर मचाएगा, उसकी क्या वैल्यु है? मन तो न्युट्रल (नपुंसक) है, वह नान्यतर जाति है। वह पुरुष नहीं है या स्त्री जाति नहीं है। उसका तो मानता होगा कोई व्यक्ति? माइन्ड इज़ न्युट्रल।

प्रश्नकर्ता : मन को पसंद नहीं हो और यह 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' बोलें तो कुछ लाभ होगा क्या?

दादाश्री : बहुत लाभ होगा। वह तो 'नापसंद' हो और फिर भी बोलें तभी लाभ होता है। अर्थात् मन को 'नापसंद' हो तब हमें 'जय जयकार हो' बोलें तो क्या फायदा? अरे, अधिक फायदा होगा बल्कि। मन के विरुद्ध करें तो मन एक तरफ समझ जाता है कि अब अपनी नहीं मानते। इसलिए अपने बोरिया-बिस्तर बाँधकर दूसरे गाँव जाने की तैयारी कर लो। उसका अपमान हो जाए तो बहुत ही अच्छा रहेगा। मन का तो मानना ही नहीं चाहिए न! 'मन का चलता तन चले, ताका सर्वस्व जाय।'

'नापसंद' को निकाल दे, वह पुरुषार्थ

प्रश्नकर्ता : यों 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' बोलना हो तो वह बोलना अच्छा लगता है लेकिन दस-पंद्रह मिनट से ज़्यादा बोलना पड़े तो फिर मन को अच्छा नहीं लगता।

दादाश्री : मनुष्य उसे कहते हैं कि 'नापसंद' रहे ही नहीं और जब तक कोई भी चीज़ 'नापसंद' रहेगी तब तक ज़बरदस्ती से वह करना पड़ेगा। आपको यह दवाई 'नापसंद' हो तब भी वह पीनी पड़ती है न? या फिर छः रस लें, कड़वा साथ में लें तो फिर कड़वी दवाई नहीं लेनी पड़ेगी। लेकिन वह नहीं लेते इसलिए फिर कड़वी दवाई लेनी पड़ती है। रस तो पूरे करने पड़ेंगे न?

प्रश्नकर्ता : 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' बोलना अच्छा लगता है। लेकिन वह लंबा चले न, तब ऐसा लगता है कि अब बंद कर दें।

दादाश्री : लंबा किसे कह रहे हो? तेरे लंबे-छोटे का तो ठिकाना नहीं है न? तेरी तो डिक्सनरी ही अलग तरह की है! 'पसंदीदा' हो उतना ही हो सकता है और कुछ नहीं हो सकता। तब तो फिर ये सारी दवाईयाँ पसंद हैं तभी पीते होंगे? संडास लगे तब जाना अच्छा आता होगा? ये खाँसना अच्छा लगता होगा लोगों को? छींकना अच्छा लगता होगा? छींक नहीं आ रही हो तो अंदर कुछ डालकर भी छींक ले आता है। 'नापसंद'

को निकाल दे, वही पुरुषार्थ है। 'नापसंद' अर्थात् क्या आप मालिक हो? कौन हो आप? कहते हो, 'मुझे पसंद नहीं है।' तो पढ़ाई करना भी अच्छा नहीं लगता, लोगों को। स्कूल में जाना, ठंड में निकलना पसंद होगा? परंतु जाना ही पड़ता है न? बिस्तर से उठना भी पसंद नहीं है, ऐसे भी बच्चे हैं। ऐसे नहीं होते?

प्रश्नकर्ता : होते हैं।

दादाश्री : अरे, ये सभी बच्चे नहीं उठते। वे तो सभी को उठाते हैं फिर।

प्रश्नकर्ता : मुझे भी सुबह उठना अच्छा ही नहीं लगता।

दादाश्री : किसी को भी अच्छा नहीं लगता। लेकिन उठे बगैर चारा भी नहीं है न। चलता ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन मन ऐसा समझाता है कि यह गाने से कुछ भी नहीं होगा।

दादाश्री : लेकिन ऐसा उल्टा समझाए तब आपको कहना नहीं चाहिए कि आज तक तूने मेरा क्या भला किया है, वह मैं जानता हूँ। इसलिए तेरी सलाह तेरे पास रख! तेरी बात हमें नहीं सुननी है।' वह अलग है और हम अलग है, हमें क्या लेना-देना? अभी तक हम ऐसा समझते थे कि सगा भाई ही है, इसलिए उसके कहे अनुसार चलते थे।

प्रश्नकर्ता : सभी गाते हैं और हम नहीं गा पाते, यह हम जानते हैं सही।

दादाश्री : हाँ, लेकिन उसके लिए अनुमोदना करनी चाहिए। 'ये सभी गा रहे हैं तो गाओ,' कहना। तो आप भी साथ में दो लाइनें बोलने लगोगे।

नियमानुसार बोलो, घोटाले वाला नहीं चलेगा

अभी खंभात गए थे। तब एक भाई से कहा कि 'भाई, दादा भगवान के असीम जय-जयकार' बोलो। वह बोलने लगा। बोल ज़रूर रहा था लेकिन उत्साह नहीं था। उत्साह नहीं दिखाई दे रहा था। तब मैंने कहा, 'तू ऐसा कर, क्या है तेरा नाम?' चंदू। तो तू चंदू से कह कि 'ढंग से बोलो। ऐसा घोटाले वाला नहीं चलेगा।' ऐसा कहलवाकर फिर बुलवाया। अच्छी तरह बोला, इतनी अच्छी तरह से बोला, वास्तव में, अंत तक। तो यही तरीका है, और कुछ नहीं। आपको सिर्फ कहना चाहिए। 'ऐसा क्यों हो रहा है? नहीं होना चाहिए'। तो चली गाड़ी। यह तो, कोई कहने वाला ही नहीं है न! कोई नहीं हो तो हम तो हैं न। फिर कोई डोज़िंग (सुस्ती) रहेगी क्या? कोई दूसरा कहे तो हमें अच्छा नहीं लगेगा। इसके बजाय हम खुद ही कहें तो क्या बुरा है? अब ये बातें आपको कहनी हैं। आपको समझ में आ गया न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादाजी।

दादाश्री : यानी वे ऐसा सिर्फ एक ही बार कहे न, 'अरे चंदूभाई, आप इतने बड़े, पी.एच.डी. होकर, ऐसा तो कैसा बोल रहे हो?', इस प्रकार उनसे कहना। क्योंकि वे जानते हैं कि ये 'जुदा' हैं और आप भी जानते हो कि ये 'जुदा' हैं। लेकिन फिर जुदाई रखते नहीं हो। ऐसा रखो। क्या जुदाई नहीं रखनी चाहिए? फिर देखना कि आपके कहे अनुसार चलते हैं या नहीं। आप कहकर तो देखना, मैंने ये जो उदाहरण दिए हैं, वहाँ।

व्यवहार की परेशानियाँ भी दूर करे

प्रश्नकर्ता : 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' आप यह जो बोलने के लिए कहते

हैं, तो अब ये जितने लोग व्यवहारिक दु:खों को लेकर आपके पास आते हैं, उन्हें भी आप खास यह बोलने के लिए कहते हैं?

दादाश्री : हाँ, वे व्यवहारिक परेशानियाँ भी चली जाती हैं। यह तो कैश (नक़द) बैंक है।

प्रश्नकर्ता : इन व्यवहार के दु:खों पर भी कैश बैंक लागू होता है?

दादाश्री : बिल्कुल! भगवान किन्हें कहते हैं! और यह चीज़ परोक्ष नहीं है, यह प्रत्यक्ष है।

प्रश्नकर्ता : जिसके डिस्चार्ज में जो भी कर्म भुगतने के लिए आए हों, तो क्या यह बोलने से उसके कर्मों का *भोगवटा* (सुख या दु:ख का असर) बंद हो जाता है?

दादाश्री : हाँ, लेकिन बंद हो जाता है यानी क्या, कि दस रतल का पत्थर आपको लगने वाला हो न, उसके बजाय पाव रतल का पत्थर लगता है। दस रतल से व्यक्ति मर सकता है और यदि सिर में चोट लगे तो खून निकल सकता है लेकिन इतना फर्क पड़ जाता है। निमित्त तो छोड़ता नहीं न! निमित्त तो भगवान को भी नहीं छोड़ता। लेकिन यदि उसकी बुद्धि को स्वीकार हो गया और यह बोले तो उसका काम हो जाता है। इसलिए हम उसे कहते हैं कि बोलना। तो वह बोलता है और उसका काम भी हो जाता है।

बर्फरूपी कर्मों का सरलता से भुगतान

जिस दिन यह 'ज्ञान' देते हैं उस दिन क्या होता है? ज्ञानाग्नि से उसके जो कर्म हैं, वे भस्मीभूत हो जाते हैं। दो प्रकार के कर्म भस्मीभूत हो जाते हैं और एक प्रकार के कर्म बाकी रहते हैं। जो कर्म भापरूपी हैं, उनका नाश हो जाता है और जो कर्म पानी रूपी हैं, उनका भी नाश हो जाता है लेकिन जो बर्फ रूपी कर्म हैं, उनका नाश नहीं होता है। जो बर्फ रूपी कर्म हैं, उन्हें भोगना ही पड़ता है। क्योंकि वे जमे हुए हैं। जो कर्म फल देने के लिए तैयार हो गया है, वह फिर छोड़ता नहीं। लेकिन पानी और भाप स्वरूप जो कर्म हैं, उन्हें ज्ञानाग्नि उड़ा देती है। इसलिए ज्ञान पाते ही लोग एकदम हल्के हो जाते हैं, उनकी जागृति एकदम बढ़ जाती है। क्योंकि जब तक कर्म भस्मीभूत नहीं होते, तब तक जागृति बढ़ ही नहीं सकती व्यक्ति की! बर्फरूपी कर्म तो हमें भोगने ही पड़ते हैं।

परंतु स्वरूपज्ञान देने के बाद उन कर्मों के भुगतान में फर्क पड़ जाता है। सूली का घाव सूई जैसा लगता है। 'ज्ञानी पुरुष' कारण स्वरूप में रहे हुए कर्मों का नाश कर देते हैं, परंतु आज जो कार्य स्वरूप के कर्म हैं, बर्फरूप हो चुके हैं, उन्हें तो भुगतना ही पड़ेगा।

और फिर उन्हें भी सरल रीति से कैसे भोगें, उसके सब रास्ते हमने बताए हैं कि, ''भाई, ये 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' बोलना, त्रिमंत्र बोलना, नव कलमें बोलना''।

दादा भगवान मिले यही सबसे बड़ा ज़ेवर

कल एक बूढ़े चाचा आए थे, वे मेरे पैरों में गिरकर खूब रोए! मैंने पूछा, 'क्या दु:ख है आपको?' तब कहा, 'मेरे ज़ेवर चोरी हो गए, मिल ही नहीं रहे, अब वापस कब आएँगे?' तब मैंने उनसे कहा, 'वे ज़ेवर क्या आप साथ में ले जाने वाले थे?' तब कहा, 'नहीं, उन्हें साथ में नहीं ले जा सकते, लेकिन मेरे ज़ेवर चोरी हो गए न, वे वापस कब मिलेंगे?' मैंने कहा, 'आपके चले जाने के बाद मिलेंगे!' ज़ेवर चोरी हो गए उसके

लिए इतनी हाय, हाय, हाय! अरे, जो चला गया उसकी चिंता करनी ही नहीं होती। शायद कभी आगे की चिंता, भविष्य की चिंता करे, वह तो हम समझते हैं कि बुद्धिशाली व्यक्ति को चिंता तो होगी ही, लेकिन गया उसकी भी चिंता? अपने देश में ऐसी चिंता होती है! घड़ी भर पहले जो हो चुका है उसकी क्या चिंता? जिसका उपाय नहीं है, उसकी क्या चिंता? कोई भी बुद्धिशाली समझ जाएगा कि अब उपाय नहीं रहा, इसलिए उसकी चिंता नहीं करनी है।

वे चाचा रो रहे थे, लेकिन मैंने उन्हें दो मिनट में ही पलट डाला। फिर तो 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' बोलने लगे! वे आज सुबह में भी वहाँ रणछोड़ जी के मंदिर में मिल गए, तब बोल उठे, 'दादा भगवान!' मैंने कहा, 'हाँ, वही।' फिर बोले, 'पूरी रात मैंने तो आपका ही नाम लिया!' इन्हें तो इस ओर मोड़ो तो इधर, इन्हें ऐसा कुछ भी नहीं।

प्रश्नकर्ता : आपने उनसे क्या कहा था?

दादाश्री : मैंने कहा था, 'वे ज़ेवर वापस नहीं मिलेंगे, किसी और तरीके से ज़ेवर मिलेंगे।'

प्रश्नकर्ता : आप मिले, इसका मतलब बहुत बड़ा ज़ेवर ही मिल गया न!

दादाश्री : हाँ, यह तो आश्चर्य है! लेकिन उन्हें यह कैसे समझ में आए? उनके लिए तो उन ज़ेवरों के सामने इसकी क़ीमत ही नहीं है न! अरे, जब उन्हें चाय पीनी हो तब उनसे मैं कहूँ कि, 'मैं हूँ न, तुम्हें चाय का क्या करना है?' तब वे कहेंगे, 'मुझे चाय के बिना चैन नहीं पड़ता, आप हों या न हों!' इनके लिए क़ीमत किस चीज़ की? जिसकी इच्छा है उसकी।

लड़ें-झगड़ें उसके बावजूद भी अंततः ज्ञान हाज़िर

एक भाई कह रहे थे। मुझसे कह रहे थे, वाइफ के साथ मेरा सात घंटे तक वाकयुद्ध चला। सुबह से चला, डाँट-डपट हुई, तो वह सात घंटे तक चली परंतु मुँह से वाकयुद्ध, उसके बाद अंतिम आठवें घंटें में कायायुद्ध शुरू हो गया। उसने मेरे बाल पकड़े और मैं भी मारने लगा। उतने में वह भी बाल खींचकर परेशान करने लगी। क्या कहते हैं? एक घंटा सब कायायुद्ध चला! आठ घंटे इसमें गए और नौवें घंटें में तो हम दोनों साथ में चाय पी रहे थे, कहते हैं। अक्रम विज्ञान को भी धन्य है!

प्रश्नकर्ता : आठ घंटे तक अक्रम विज्ञान कहाँ गया था? नौवें घंटे में कहाँ से आ गया?

दादाश्री : नहीं, अक्रम विज्ञान भीतर था ही लेकिन यह भूमिका निभानी थी न, यानी वह तो पूरी फिल्म थी।

प्रश्नकर्ता : पूरी फिल्म बन चुकी थी।

दादाश्री : जो बन चुकी फिल्म थी वह भूमिका निभा ली। उसके बाद अक्रम विज्ञान हाज़िर हुआ। फिल्म की भूमिका पूरी हो गई इसलिए अक्रम विज्ञान वापस तैयार होकर, फिर नौवें घंटे में साथ में चाय-पानी पीकर कहते हैं, 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' बोलो, आमने-सामने माफी माँग ली!

दादा का नाम लेते ही, केस में परिवर्तन

अपने वहाँ एक ज्ञान लिए हुए महात्मा है। उनकी सास टाटा केन्सर हॉस्पिटल में थीं। तो उनकी सास को हॉस्पिटल वालों ने छुट्टी दे दी कि अब दो-तीन दिन में यह केस 'फेल'

होने वाला है, इसलिए दो-तीन दिनों में आप घर पर ले जाओ। तब उस व्यक्ति के मन में ऐसा हुआ कि, 'दादा यहाँ पर मुंबई में ही हैं, तो मेरी सास को दर्शन करवा दूँ। फिर यहाँ से ले जाऊँगा।' इसलिए मुझे आकर वहाँ पर कहने लगे कि, 'मेरी सास है न, उन्हें यदि दर्शन दे सकें तो बहुत अच्छी बात है।' मैंने कहा, 'चलो, मैं आता हूँ।' मैं वहाँ टाटा हॉस्पिटल में गया। उसने कहा, 'दादा भगवान आए हैं।' बाद में वह स्त्री तो अच्छी हो गई और किसी के मन में आशा भी नहीं थी, वे चार वर्ष तक जीवित रहीं फिर। उन डॉक्टरों ने भी नोट किया कि ये दादा भगवान कोई आए और न जाने यह क्या किया! पर मैंने कुछ भी नहीं किया था। सिर्फ पैर पर विधि करवाई थी! ऐसा बड़ौदा के बड़े हॉस्पिटल वालों ने भी नोट किया है कि 'दादा भगवान' से इतने केसों में परिवर्तन हो गए हैं।

निरालंब दादा का नाम लेते ही कल्याण

अरे! वहाँ अस्पताल में बोलते हैं फिर भी प्रत्यक्ष तक पहुँच जाता है और फल भी मिलता है! पहले तो फूलों की माला 'दादाजी' को पहनाते थे न, गले में दस-पंद्रह मालाएँ होती थी। तो एक व्यक्ति ऐसा था कि जो ये सभी मालाएँ ले जाता और अस्पताल में लोगों को पहना देता था। अब उन लोगों ने तो मुझे देखा तक नहीं था। वे यहाँ आए भी नहीं थे, मुझे पहचानते भी नहीं थे। ऐसे लोगों को माला पहनाकर कहते हैं कि, 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' बोलो। तो सुबह तक परिवर्तन आ जाता था। डॉक्टर पूछते थे कि 'इसमें किससे परिवर्तन दिखाई दे रहा है? यह परिवर्तन कैसे हुआ इन लोगों में!'

अब इनको कैसे पार पाएँ? इन दादा भगवान को कैसे पार पाएँ? जिन्हें देखा नहीं हो फिर भी यों ही परिवर्तन करवा देते हैं, ये भगवान कैसे हैं! ये तो कैश बैंक हैं। उसके बावजूद भी निमित्त हैं न! क्योंकि ये दादा भगवान नहीं है। दादा भगवान तो भीतर बैठे हैं, वे दादा भगवान हैं। यानी दादा भगवान सभी जगह पर है। नाम लेते ही कल्याण हो जाता है। यानी जो मूल आत्मा है, निरालंब है, वे दादा भगवान हैं।

यह तो हमारा यशनाम कर्म

अब वह चमत्कार कहलाता हो तो वैसे अपने यहाँ रोज़ सौ-सौ, दो सौ-दो सौ चमत्कार होते हैं।

कोई कहता है, 'घर पर मेरे भाई को बुखार बहुत रहता है, आज पंद्रह-बीस दिनों से उतरता नहीं है।' मेरी एक माला उसे देता हूँ न, तब दूसरे दिन पत्र आता है कि बुखार बिलकुल चला गया है। माला पहनते ही चला गया है। ऐसे बहुत सारे 'केस' होते हैं। यह तो हमारा यशनाम कर्म है। और वे संत भी जो चमत्कार करते हैं न, वह भी यशनाम कर्म होता है।

प्रश्नकर्ता : फिर भी वह चमत्कार जैसा नहीं है, ऐसा आप कहते हैं?

दादाश्री : हाँ, चमत्कार किया वैसा हम नहीं कहते और यह जो सुना न, उससे तो कई बड़े हो चुके हैं, जगत् आफरीन हो जाए वैसे हुए हैं, पर उन्हें यदि चमत्कार कहोगे तो दूसरों के चमत्कार चलते रहेंगे। इसलिए मैं इन चमत्कारों को तोड़ने के लिए आया हूँ। असल में, हक़ीक़त में, वास्तविकता में वह चमत्कार है ही नहीं।

यह हमारा फोटो भी बहुत काम करता है।

इसलिए लोगों को हम आखिर में फोटो देते हैं। क्योंकि इतना यदि काम नहीं करे तो ये 'बर्तन' चमकाए जा सकें वैसे नहीं हैं। बर्तन इतने अधिक गंदे हो गए हैं कि चमकाए जा सकें वैसा नहीं है इसलिए यह कुदरत उसके पीछे काम कर रही है। सब हो रहा है, चमत्कार नहीं है यह! ऐसे-ऐसे तो रोज़ कितने ही पत्र आते हैं कि 'दादा, उस दिन आपने कहा था कि जा, तुझे नौकरी मिल जाएगी, तो मुझे नौकरी मिल गई!' यह सब कुदरत करती है!

एक घंटा बोलते हैं, वहाँ हमेशा शांति

ये (प्रात:विधि में) पाँच बार बोलते हैं, नौ कलमें बोलते हैं, त्रिमंत्र बोलते हैं, 'दादा भगवान के असीम जय जयकार' बोलते हैं फिर और बोलने को बचा ही क्या? फिर स्पर्श नहीं करेगा न संसार! फिर भले ही संसार चारों ओर से घेर लें! त्रिमंत्र और नौ कलमें बोलेंगे तो संसार में आने वाली अड़चनें कम हो जाएँगी। उससे आपको कोई दु:ख नहीं रहेगा और संसार भी बहुत अच्छे से चलेगा।

ये नौ कलमें और ये त्रिमंत्र सब बोलते हैं न, फिर शांति में से वापस अशांति होती ही नहीं। कई जगहों पर तो, अहमदाबाद में तो कई लोग 'दादा भगवान के असीम जय जयकार' एक घंटे के लिए बोलते हैं तब दादा वहाँ दिखते भी हैं! और फिर सब लोग आकर हम से कह भी जाते हैं। उन्हें हमेशा शांति रहती है, पूरे दिन। तो फिर इतना ही चाहिए न? अगर शांति रहेगी तो बेकार ही नए कर्म नहीं बंधेंगे। और जहाँ अपना यह ज्ञान है, वहाँ तो कुछ भी रहता ही नहीं न! जहाँ जाए वहाँ आज्ञा में रहता हो, उसके लिए कुछ भी नहीं रहता।

दादा को सौंप दो तो परेशानी नहीं रहेगी

आप शुद्धात्मा हो गए, लेकिन चित्तवृत्ति की निर्मलता हो तो उलझनें नहीं होती और सांसारिक काम सरल होते जाते हैं। यह तो जब तक हम अपने हाथ में पकड़े रखते हैं न, तभी तक मुश्किल है। दादा को सौंप दों तो मुश्किल रहेगी ही नहीं। फिर मुश्किल आएगी ही नहीं। मुश्किल कैसे आएगी? आपको विचार आए तभी से वह काम होता ही रहता है। मुश्किल आने से पहले ही खत्म हो जाती है। इतना बड़ा पत्थर लगने वाला हो उसके बजाय इतना सा पत्थर लग कर चला जाता है। यह विज्ञान बहुत अलग तरह का है! यह अक्रम विज्ञान सभी प्रकार से मुक्ति दिलाए ऐसा है!

बालक को परोसा संसार धर्म

प्रश्नकर्ता : दादा, यह बच्ची पूछ रही है कि बच्चों को तो ज्ञान (ज्ञानविधि) नहीं दे सकते, तो उनके लिए क्या है? जैसे आप इन सब बड़ो को आज्ञा देते हैं, वैसे हम छोटे बच्चों के लिए आप क्या आज्ञा देते हो?

दादाश्री : उन्हें तो यह संसार का धर्म देते हैं हम।

प्रश्नकर्ता : दादा, संसार का धर्म कौन सा?

दादाश्री : अपनी ये नौ कलमें, त्रिमंत्र और 'दादा भगवान के असीम जय जयकार', आरती, नमस्कार विधि और ये सब, ये सभी धर्म करें, इतने से बहुत सेटिस्फेक्शन (संतोष) हो जाता है।

और लोगों को सुख ही देना है, दु:ख नहीं देना है। यह व्यापार अच्छा, साफ करना है। हमें दुकान में सुख का माल रखना चाहिए या दु:ख

का? दुकान शुरू करें तो सुख का माल रखना चाहिए या दुःख का?

प्रश्नकर्ता : सुख का ही, दादा!

दादाश्री : हाँ, सभी को सुख का माल देना। कभी दुःख आ जाए तो भी हमें उन्हें सुख देना है। अंत में, सुख की विजय होगी। दुःख की विजय नहीं होती। दुकान में देने के लिए सुख का ही माल रखना है। सुख की दुकान खोलना। कोई सलाह लेने आए तो अच्छी सलाह देना। कोई झगड़ा करने आए तो आपको उससे कहना है कि, 'भाई, मेरी भूल-चूक हुई हों तो आपसे माफी माँगता हूँ, लेकिन क्या हुआ है, ऐसा किसलिए कर रहे हो?' उसका निपटारा कर देना। नहीं हो सकेगा?

प्रश्नकर्ता : हाँ, हो सकेगा।

घर में आरती-जयकारा से संस्कार सिंचन

प्रश्नकर्ता : बच्चों में क्लेश न हों उसके लिए संस्कार सिंचन कैसे करना है?

दादाश्री : छोटे बच्चों को समझाना चाहिए कि सुबह नहा-धोकर भगवान की पूजा करनी चाहिए और रोज़ संक्षेप में बोलें कि, 'मुझे तथा जगत् को सद्बुद्धि दीजिए और जगत् कल्याण कीजिए।' इतना बोलेंगे तो उन्हें संस्कार मिले कहा जाएगा। दूसरा, आपको बच्चों से 'दादा भगवान के असीम जय-जयकार हो' रोज़ बुलवाना चाहिए। हिन्दुस्तान के बच्चे इतने सुधर गए हैं कि सिनेमा देखने नहीं जाते। शुरू के दो-तीन दिन थोड़े परेशान होते हैं, लेकिन दो-तीन दिनों बाद, सब ठीक हो जाने पर अंदर स्वाद उतरने पर बल्कि उसी को याद करते रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : घर पर आरती करने का क्या महत्व है?

दादाश्री : आरती का फल, यहाँ मेरी उपस्थिति में जैसा मिलता है न, ऐसा फल कहीं और नहीं मिलता। और वह तो अपना आयोजित किया हुआ है। लेकिन फिर भी आरती का फल बहुत उच्च प्रकार का मिलेगा, घर में करोगे तब भी। इसलिए सभी ने यह सब निर्धारित कर लिया है। पूरे दिन दूषित वातावरण खड़ा नहीं होता न! निरे क्लेश के वातावरण वाले घर हैं। अब अगर उसमें आरती का आयोजन किया हो न, तो पूरे दिन, बच्चों में और घर के सभी लोगों मे फर्क आ जाता है। आरती में बच्चे वगैरह सभी खड़े रहते हैं। उन बच्चों के मन अच्छे रहते हैं फिर और चिढ़े हुए बच्चे होते हैं न, उन बच्चों का क्या? यह तपिश, बेचैनी और बाहर का कुसंग, इसलिए कुचरित्र के ही विचार आते रहते हैं। उसमें अपनी यह जो आरती है न, वह ठंडक देती है। और उन विचारों को भगा देती है। बचाने का साधन है यह।

यह बहुत सुंदर है। कई तो सुबह-शाम दोनों समय करते हैं। बच्चे साथ में खड़े रहते हैं न, और बड़ों को क्लेश नहीं होता। निरा क्लेश का ही वातावरण है। आजकल तो, क्लेश नहीं करना हो, पैसे हों, सारे साधन हों, उसके यहाँ भी क्लेश प्रवेश कर ही जाता है। खाने पर बैठने के बाद टेबल थपथपाते हैं, थपथपाते हैं या नहीं थपथपाते? 'आपने ऐसा किया और आपने वैसा किया', हो जाता है शुरू। नहीं होता? इसलिए कई परिवारों में ऐसा तय हुआ है कि भोजन के बाद सभी को, पत्नी-बच्चे और पति सबको साथ मिलकर हमारा यह 'विधि-आरती-असीम जय जयकार हो' आदि बोलना है। ताकि बच्चें सब

रेग्युलर हो जाएँ! सयाने हो जाएँ! दूसरे दिन जो बाहर घूमने जाने को कहता हो वह अब कहे, 'हम वह बोलेंगे जो कल बोला था'। ऐसा कहे। बाहर घूमना मुलतवी कर दें और अच्छे संस्कार पड़ें। अब धीरे-धीरे यह आरती सभी लोगों के यहाँ गवानी चाहिए। ताकि उनके घर के सभी बच्चे संस्कारी बनें और नया वातावरण उत्पन्न हो जाए। पाँच-सात लाख लोग गाने लग जाएँ तो बहुत हो गया। बाद में उनके बच्चे भी गाएँगे। वे आरती-विधि वगैरह सब करेंगे। इससे दिन भर घर के सभी लोग परमानंद में रहेंगे!

यह भगाए कषायों को भी

प्रश्नकर्ता : यह 'असीम जय जयकार हो' मन में कषाय हों तब बोल सकते हैं?

दादाश्री : कषाय हैं और बोलो तो उत्तम! कषायों को बंद हो जाना पड़ता है, उस घड़ी उनको चले जाना पड़ता है। ऐसा बोलते हैं, उस समय वे कषाय घर खाली कर देते हैं । वे खड़े रहेंगे क्या? कषाय हों तब आप बहुत ज़ोर से बोलोगे तो वे चले जाएँगे। लेकिन ज़ोर से बोलना पड़ेगा। आपके सिर में ज़ोरों से आवाज़ गूँजती रहे, इस तरह से बोलना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : लेकिन इसका अर्थ ऐसा नहीं होगा कि इन कषायों से दूर भाग गए?

दादाश्री : कषाय ही दूर भाग जाते हैं! बाकी, आपको कहाँ दूर भागना है?

आरती-जयकारा के समय दादा हाज़िर

प्रश्नकर्ता : 'दादा भगवान के असीम जय-जयकार हो' तथा 'आरती' के समय आप जिस दृष्टि से देखते हैं, वह अवस्था और आप सत्संग करते हैं तब उस अवस्था में फर्क है क्या?

दादाश्री : फर्क तो है, उसमें बहुत फर्क है।

प्रश्नकर्ता : यानी क्या फर्क है, दादा?

दादाश्री : मैं आरती (और असीम जयकार) में हन्ड्रेड परसेन्ट (सो प्रतिशत) शुद्ध होकर बैठता हूँ। उस समय, हम भगवान में एकाकार हो जाते हैं और अभी (सत्संग करते हैं तब) जुदा रहते हैं। इस समय यह टेपरिकॉर्ड बज रहा है न, उसके ज्ञाता-द्रष्टा की तरह रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : आपका आरती उतारने का कारण क्या है? आरती क्यों उतारते हैं आप?

दादाश्री : आरती तो, यदि भगवान की नहीं उतारें तो और किसकी उतारें? तो फिर भगवान को क्या करें, बताओ। आप जो कहो, वह करें।

प्रश्नकर्ता : यह तो मुझे मालूम नहीं है, इसीलिए तो मैं पूछ रहा हूँ।

दादाश्री : खुद का आर्तध्यान बंद हो जाए, उसके लिए है। जो यह आरती उतारेगा, उसे आर्तध्यान नहीं होगा। आरती में एक बार दादाजी के दर्शन हो जाएँ न, तो फिर आर्तध्यान उड़ जाता है। आरती में और फिर 'दादा भगवान के असीम जय-जयकार' गाते समय के दर्शन, तो खुद भगवान महावीर के दर्शन हैं। इसे तो यदि समझें न, तो आरती में दादा के दर्शन, एक्ज़ेक्ट भगवान महावीर के दर्शन होते हैं और महात्मा यह समझ गए हैं, इसलिए ऐसे दर्शन करते हैं।

यह आरती ठीक से बोली जाए तो घर पर 'दादा' हाज़िर हो जाते हैं। और 'दादा' हाज़िर हो जाएँ, तब सभी देवी-देवता हाज़िर हो जाते हैं और सभी देवी-देवताओं की कृपा रहती है। आरती तो घर पर नियमित करनी चाहिए और

उसके लिए एक समय निश्चित कर दिया जाए तो बहुत ही अच्छा।

ज़रूरत जागृति की, नहीं कि एकाग्रता की

प्रश्नकर्ता : दादा, अब एक प्रश्न यह उठता है कि जब दादा हाज़िर नहीं होते, तब (उनका) फोटो रखकर आरती करते हैं। उस समय कोई एक व्यक्ति आरती करता है, फिर दूसरा, फिर तीसरा लेता है। इस प्रकार आरती को एक-दूसरे तक पहुँचाने में ही हमारा मन लगा रहता है और ठीक तरह से एकाग्रता से आरती नहीं हो पाती, तो तब कैसे करना चाहिए?

दादाश्री : एकाग्र होकर करने की ज़रूरत नहीं है। एकाग्रता से करने पर आप एकाग्र हो जाएँगे, तो आत्मा विस्मृत हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : नहीं, एकाग्रता से नहीं, जागृति से, दादा। आरती जागृति से नहीं हो पाती।

दादाश्री : अर्थात् 'मैं आत्मा हूँ' यह *लक्ष* (जागृति) में होता ही है और आरती करने वाले को जानते हैं। आरती करने वाले को जानते है तो बहुत हो गया, कौन कर रहा है यह।

प्रश्नकर्ता : दादा, आपने कहा है न, कि जब आरती करें या 'दादा भगवान के असीम जय-जयकार' बोलें उस वक्त यों एक-एक शब्द पढ़ना चाहिए।

दादाश्री : 'दादा भगवान के असीम जय-जयकार हो' पढ़ा जाए तो ठीक है, लेकिन नहीं पढ़ा जाए, ऐसा नहीं हो रहा हो, उतनी शक्ति नहीं हो तो उसमें हर्ज नहीं है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, वह फिर एकदम मिकेनिकल नहीं हो जाना चाहिए न?

दादाश्री : मिकेनिकल होता ही नहीं, यदि नहीं पढ़ पाएँ तो क्या करोगे?

प्रश्नकर्ता : ज़ोर से बोलें और खुद सुनने का प्रयत्न करें।

दादाश्री : हाँ, वह बहुत उपयोगी है।

अक्रम में खुद के स्वरूप की ही भक्ति

ये धर्म में जो सारे पुरुषार्थ चल रहे हैं, वे तो खेत में खेतीबाड़ी करते हैं। बीज डालते हैं उसका पचास-सौ गुना मिलता रहता है। धर्म की खेतीबाड़ी! अगले जन्म के लिए आज कुछ बोते हैं, तो अगले जन्म में सौ गुना प्राप्त होता है। बाहर जो धर्म चल रहे हैं न, सभी प्रकार के क्रियाकांड, वे सभी धर्म की खेतीबाड़ी हैं।

प्रश्नकर्ता : अपने इस मार्ग में भी थोड़ी खेतीबाड़ी है न? अपने में भी आरती-विधि नहीं हैं?

दादाश्री : अपने में खेतीबाड़ी होती होगी? खुद खुदा हो गए न!

प्रश्नकर्ता : यह आरती करते हैं वह खेतीबाड़ी नहीं है?

दादाश्री : यह तो अपने यहाँ जो आरती है वह खुद की आरती है। आप खुद की ही आरती कर रहे हो, (यहाँ) हर एक व्यक्ति खुद अपनी ही आरती कर रहा है। यहाँ सबकुछ अपना खुद का है। यह आरती भी स्वयं खुद की ही है। हमारा कुछ भी नहीं। जिसे जितना करना आया उतना ही उसका काम होगा।

अपने यहाँ जो पद गाते हैं न, वह क्या है? अपने खुद की ही कीर्तनभक्ति है। अपने यहाँ खुद के अलावा रिलेटिव चीज़ ही नहीं हैं। दादा का

नाम लेना वह खुद के ही 'शुद्धात्मा' का नाम लेने के बराबर है। ये पद (भजन) गाते हैं वह खुद के ही शुद्धात्मा का कीर्तन गाए, उसके जैसा है।

ज्ञाता-द्रष्टा होकर बुलवाए, वह यथार्थ पुरुषार्थ

प्रश्नकर्ता : 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' बुलवाते हैं, वह पुरुषार्थ में आता है?

दादाश्री : पुरुषार्थ ही है न! बड़ा पुरुषार्थ है यह, अपनी प्रकृति को अलग देखना, वह!

प्रश्नकर्ता : यह जो बोलते हैं, वह पुरुषार्थ है और वह जो ज्ञाता-द्रष्टा में रहने का पुरुषार्थ है, इन दोनों में फर्क पड़ता है क्या?

दादाश्री : ज्ञाता-द्रष्टा का पुरुषार्थ तो, उसकी बात ही अलग है न! बाकी, अभी ये जो ज्ञाता-द्रष्टा रहते हैं न, वह वास्तविक ज्ञाता-द्रष्टापन नहीं है। वे तो सिर्फ ऐसा मानते हैं। सभी उसके नज़दीक हैं। ये वकील प्लिडींग करते हैं, वे कहेंगे, 'मैंने सही, एक्ज़ेक्ट प्लिडींग की है'। इसी तरह यह 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' बोलते हैं न, वह एक्ज़ेक्ट किया, कहेंगे। या तो मैं ज्ञाता-द्रष्टा रहता हूँ, वह 'मैंने एक्ज़ेक्ट ही किया है' कहेंगे, लेकिन ज्ञाता-द्रष्टा एक्ज़ेक्ट नहीं रह पाते।

सिन्सियरिटी से हो, वहाँ समाधि सुख

प्रश्नकर्ता : दादा, हमें 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' बोलना है, ऐसा होना चाहिए, लेकिन हमें अंदर ऐसा रहता है कि नहीं करना है, तो वहाँ पर अपनी सिन्सियरिटी कैसे डेवलप (विकसित) करें?

दादाश्री : सिन्सियरिटी यानी क्या? एक व्यक्ति सब्ज़ी काटते हुए 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' बोलता रहता है, उसे सिन्सियरिटी नहीं कहेंगे। सिन्सियरिटी तो वह जो भी बोल रहा है, उसे पढ़ता रहे और पढ़ने वाला वास्तव में पढ़ रहा है या नहीं, खुद उसे 'देखने वाला' रहे।

प्रश्नकर्ता : दादा, हमें मन में पढ़ना चाहिए और फिर उसका क्या करना चाहिए?

दादाश्री : ठीक से पढ़ रहा है या नहीं, उसे जानना चाहिए। अर्थात् बोलने वाला है, पढ़ने वाला है और जानने वाला है। जितना जानने वाले में रहा, वह सिन्सियरिटी है, पढ़ने वाला वह सेकन्ड (दूसरा) और यह थर्ड (तीसरा)। तीनों क्लास वाले स्टेशन तक पहुँचेंगे। लेकिन अंदर का सुख अलग-अलग रहेगा। वह अपर (उच्च) क्लास का सुख होता है।

प्रश्नकर्ता : जो सूक्ष्म रूप से देखने वाला है, वह देखता है कि यह ठीक से नहीं पढ़ रहा है, तब क्या करें?

दादाश्री : नहीं, कुछ नहीं करना है। वह ठीक से नहीं पढ़ रहा है, आप उसे जानते हो तो आप फर्स्ट (प्रथम) क्लास में हो। उसे आप जानते हो कि वह ठीक से पढ़ रहा है या नहीं। उसके बाद, आप पढ़ते हो और वह बोलता है, वह सेकन्ड क्लास में है और पढ़ते नहीं और सिर्फ बोलते हो तो, वह थर्ड क्लास में। तीनों एक ही स्टेशन पर पहुँचेंगे लेकिन तीनों का सुख अलग-अलग होगा।

प्रश्नकर्ता : तो दादा, वे अलग-अलग सुख कौन से हैं? किस तरह से अलग-अलग सुख भोगे जाते हैं?

दादाश्री : उस (फर्स्ट क्लास) वाले को तो संपूर्ण रूप से समाधि सुख बरतता है। देखने

वाले रहे न, यानी आप संपूर्ण आत्मा हो गए और यदि पढ़ने वाले रहे तो वह सिन्सियरिटी है और यदि पढ़ें भी नहीं तो वह सिन्सियरिटी नहीं है।

अभ्यास से बढ़ती है शुद्धता

प्रश्नकर्ता : आपने अभी बात की न, कि 'बोलें, फिर पढ़ें और पढ़ने वाले को देखें।' लेकिन यदि पढ़ नहीं पाए और सिर्फ जो बोला जा रहा है उसे सुनें और सुनने वाले को देखें तो क्या वह भी सिन्सियर कहलाएगा?'

दादाश्री : यह देखने वाला वह ज़्यादा अच्छा है। बाकी सभी डिज़ाइन तो हैं लेकिन इसके जैसा लाभ नहीं मिलेगा। पढें तो बहुत अच्छा है। पढ़ने के बाद फिर उसे सिद्धि हो जाती है पढ़ने की। इसलिए फिर उसे जानने की क्रिया करनी चाहिए कि कितना पढ़ा जा रहा है, कैसे और कौन सा? उससे आगे फिर कोई सिद्धि नहीं रहती।

प्रश्नकर्ता : तो दादा, जब सुनते हैं न तब, अभी इस स्टेज पर सुनने में ज़्यादा एकाग्रता रहती है पढ़ने के मुकाबले में तो क्या फिर सुनने में से पढ़ने पर आना चाहिए?

दादाश्री : पढ़ना बहुत हेल्पफुल (उपयोगी) है। उसका तो प्रयत्न ही नहीं किया है।

प्रश्नकर्ता : दादा, आप पढ़ने का कह रहे हैं, वह मन में पढ़ने की बात कर रहे हैं न? बंद आँखों से ऐसे देखकर, मन में शब्द दिखाई दें, उसी तरह से करने के लिए आप कह रहे हैं न?

दादाश्री : यहाँ पढ़ते हैं न, वह दिखाई देना चाहिए। 'नमो भगवते वासुदेवाय...' इस तरह बड़े अक्षरों में दिखाई देना चाहिए, सुंदरों अक्षरों में।

प्रश्नकर्ता : उसमें फिर कुछ समय लगता है। दस मिनट में दस बार 'दादा भगवान के असीम जय जयकार' बोल पाते हैं।

दादाश्री : समय लगे तो उसमें हर्ज नहीं है। ज़ल्दी करने की कोई ज़रूरत नहीं है लेकिन प्योरिटी (शुद्धता) चाहिए। जितना देखेंगे उतनी प्योरिटी।

प्रश्नकर्ता : क्या इन अक्षरों को देखने में प्योरिटी की ज़रूरत है?

दादाश्री : हाँ।

प्रश्नकर्ता : दादा, वह तो जब प्योर हो चुके होंगे तभी आएगी न? एकदम प्योर हो चुके होंगे, तभी अंदर से पढ़ा जाएगा न?

दादाश्री : नहीं! कितना पढ़ा जा रहा है उसे देखने का धीरे-धीरे अभ्यास करोगे तो भीतर शुद्ध होता जाएगा। यदि नहीं हुआ होगा तो इस तरह करने से शुद्ध होता जाएगा।

लाखों जन्मों में जो प्राप्त करना था, उसे हमें एक ही जन्म में पूरा कर लेना है। अनंत जन्मों के नुकसान की भरपाई एक जन्म में पूरी करनी है। इसलिए आपको ज़्यादा से ज़्यादा दादा के कहे अनुसार चलना चाहिए। मार्ग सरल है, सुगम है और सहज है!

दादाई ब्लैंक चेक

ये 'दादा' एक ऐसे निमित्त हैं, जैसे ही दादा का नाम लो, तो बिस्तर से उठ-बैठ न पा रहे हों फिर भी खड़े हो जाते हैं। इसलिए काम निकाल लो। यानी निमित्त ऐसा है। आपको जो काम करना हो वह हो जाए ऐसा है, लेकिन उसमें नीयत खराब नहीं रखना। किसी के वहाँ शादी में जाने के लिए शरीर स्वस्थ हो जाए, ऐसा

मत करना। यहाँ सत्संग में आने के लिए शरीर स्वस्थ रहे, ऐसा माँगना। यानी, दादा का उपयोग अच्छे कामों के लिए करना। उसमें फिर दुरुपयोग नहीं होना चाहिए। क्योंकि दुरुपयोग नहीं होगा तभी दादा मुश्किलों के टाइम में काम आएँगे। इसलिए आपको उनका व्यर्थ में ही उपयोग नहीं करना है।

एक वणिक सेठ थे, मित्र समान। वैसे थे तो धनवान व्यक्ति, लेकिन मेरे साथ उठते-बैठते थे। एक बार इन्कम टैक्स की चिट्ठी आई थी। एक बार मैंने उनसे कहा था कि कोई परेशानी आए तो घबराना नहीं, हमें बताना। अब उस समय तो ज्ञान हुआ नहीं था! इसलिए संसार की उलझनों का हम हल ला देते थे। इन्कम टैक्स की चिट्ठी आई, तो मैंने उन सेठ से कहा हुआ था कि ऐसा कुछ कहना हो तो कहना। तब उन्होंने कहा कि आपने जो कोरा चेक दिया है, वह पूरे सौ होंगे तब भुनाऊँगा, अंतिम साँस होगी न, तब भुनाऊँगा। वर्ना ऐसे ही आपका चेक नहीं भुना सकते। उसे तो मैंने रख छोड़ा है!

यानी, दादा का तो यह ब्लैंक चेक, कोरा चेक कहलाता है। इसे बार-बार भुनाने जैसा नहीं है, कोई बड़ी परेशानी आए, तभी संकट समय की ज़ंजीर खींचना। सिगरेट का पैकेट गिर जाए और आप गाड़ी की संकट समय की ज़ंजीर खींचें तो जुर्माना लगेगा या नहीं लगेगा? अत: ऐसा दुरुपयोग मत करना।

दादा की ज़ंजीर खींचते ही आता है निबेड़ा

आपको जो दु:ख है, तब हमें तो 'इस तरफ का' 'फोन' पकड़ा और 'इस तरफ' (देवी-देवताओं को) 'फोन' किया! हमारे बीच में कुछ भी नहीं है, मात्र एक्सचेन्ज करना है। वर्ना हमें ज्ञानी पुरुष को यह सब होता ही नहीं न! ज्ञानी पुरुष इसमें कुछ हाथ नहीं डालते। लेकिन इन सबके दु:ख सुनने पड़े हैं न!

मैं इस दुनिया के दु:ख लेने आया हूँ। आपके सुख आपके पास ही रहने दो। आपके दु:ख मुझे सौंप दो और यदि आपको विश्वास हो तो वे आपके पास नहीं आएँगे। मुझे सौंपने के बाद आपका विश्वास टूटेगा तो आपके पास वापस आएँगे। इसलिए आपको कुछ दु:ख हों, तो मुझसे कहना कि, 'दादा, मुझे इतने दु:ख हैं, उन्हें मैं आपको सौंप देता हूँ।' उन्हें मैं ले लूँ तो निबेड़ा आए, नहीं तो निबेड़ा कैसे आएगा?

इन 'दादा' की कृपा से तो सब मिलता है। इसका क्या कारण है? उनकी 'कृपा' से सभी अंतराय टूट जाते हैं। 'दादा' की कृपा तो मन के रोगों के और वाणी के रोगों के, देह के रोगों के, ऐसे सभी तरह के दु:खों के अंतरायों को तोड़ने वाली है। यहाँ जगत् के सारे दु:ख चले जाते हैं।

जो 'दादा की ज़ंजीर' खींचेगा उसका काम हो जाएगा। क्योंकि वीतराग कभी किसी काल में होते ही नहीं है न! और इस काल में पूर्ण वीतराग नहीं हो सकते, लेकिन तमाम जीवों के लिए हम तो संपूर्ण वीतराग ही हैं।

किसी जगह पर 'हारें' नहीं, वे ही वीतराग! शायद कभी देह हार जाए, मन हार जाए, वाणी हार जाए पर वे खुद नहीं हारते। वीतराग कैसे सयाने होते हैं! वीतरागों का धर्म तो सैद्धांतिक है, अर्थात् 'कैश' (नकद) फल मिलता है। मोक्ष का 'कैश' फल मिलता है! जो मोक्षदाता भगवान हैं, वे निष्पक्षपाती हैं। वीतराग भगवान भीतर हैं, वे निष्पक्षपाती हैं।

वारिस अहो दादा के, शूरवीरता दिखलाना...

यह आपको गद्दी पर बैठे हों वैसा सुख है, फिर भी भोगना नहीं आए तब क्या हो? अस्सी रुपये मन के भाव वाले बासमती चावल में रेती डालते हैं! यदि दुःख आए तो उसे ज़रा कहना तो चाहिए न, 'यहाँ क्यों आए हो? हम तो दादा के हैं। आपको यहाँ नहीं आना है। आप जाओ दूसरी जगह। यहाँ कहाँ आए आप? आप घर भूल गए।' इतना उनसे कहें तो वे चले जाते हैं। यह तो आपने बिल्कुल अहिंसा की! दुःख आएँ तो उन्हें भी घुसने दें? उन्हें तो निकाल देना चाहिए। उसमें अहिंसा टूटती नहीं है। दुःख का अपमान करें तो वे चले जाते हैं। आप तो उनका अपमान भी नहीं करते। इतने अधिक अहिंसक नहीं होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : दुःख को मनाएँ तो नहीं जाएगा?

दादाश्री : नहीं, उसे मनाना नहीं चाहिए। उसे पटाएँ तो वह पटाया जा सके, ऐसा नहीं है। उसे तो आँखें दिखानी पड़ती हैं। वह नपुंसक जाति है। यानी उस जाति का स्वभाव ही ऐसा है। उसे अटाने-पटाने जाएँ तो वह ज़्यादा तालियाँ बजाता है और अपने पास ही पास आता जाता है।

'वारस अहो महावीरना, शूरवीरता रेलावजो,
कायर बनो ना कोई दी, कष्टो सदा कंपावजो।'

आप घर में बैठे हों, और कष्ट आएँ, तो वे आपको देखकर काँप जाने चाहिए और समझें कि 'हम यहाँ कहाँ आ फँसे! हम घर भूल गए लगते हैं!' ये कष्ट आपके मालिक नहीं, वे तो नौकर हैं।

यदि कष्ट आपसे काँपे नहीं तो आप 'दादा के' कैसे? कष्ट से कहें कि, 'दो ही क्यों आए? पाँच होकर आओ। अब तुम्हारे सभी पेमेन्ट कर दूँगा।' कोई आपको गालियाँ दे तो अपना ज्ञान उसे क्या कहता है? ''वह तो 'तुझे' पहचानता ही नहीं।'' उल्टे 'तुझे' 'उसे' कहना है कि 'भाई कोई भूल हुई होगी, इसीलिए गालियाँ दे गया। इसलिए शांति रखना।' इतना किया कि तेरा 'पेमेन्ट' हो गया!

कारुण्यता ज्ञानी की

मैं कहता हूँ न कि भाई, मैं तो सत्ताईस सालों से (1958 में आत्मज्ञान होने के बाद) मुक्त ही हूँ, बिना किसी टेन्शन के! अर्थात् टेन्शन हुआ करता था 'ए.एम.पटेल' को, मुझे थोड़े ही कुछ होता था। लेकिन 'ए.एम.पटेल' को भी जब तक टेन्शन रहता है, तब तक हमारे लिए बोझ ही है न! वह जब खत्म होगा तब हम समझें कि हम मुक्त हुए और फिर भी जब तक यह शरीर है वहाँ तक बंधन है। लेकिन अब उसके लिए भी हमें कोई आपत्ति नहीं है। दो अवतार ज़्यादा होने पर भी हमें आपत्ति नहीं है।

हमारा हेतु तो क्या है, कि 'यह जो सुख मैंने पाया है, पूरा जगत् वह सुख प्राप्त करे'। अपने सत्संग का हेतु क्या है? जगत् कल्याण करने का हेतु है। यह भावना कोई बेकार नहीं जाती। हम क्या कहते हैं कि सर्व दुःखों का क्षय करो। ये दुःख हमसे देखे नहीं जाते। फिर भी हममें इमोशनलपन नहीं होता है, साथ ही उतने ही वीतराग भी हैं। इसके बावजूद सामने वाले के दुःख हमसे सहन नहीं हो पाते। क्योंकि हम हमारी सहनशक्ति जानते हैं। हमसे कैसा दुःख सहन हो पाता था वह जानते हैं न, तो लोग ऐसा कैसे सहन कर पाते होंगे, उसका हमें पता है और वही कारुण्यता है हमारी!

हे 'दुःखों', गो टु दादा

और बहुत दुःख आ पड़े, तब आपको कहना चाहिए कि जाओ 'दादा' के पास।

प्रश्नकर्ता : परंतु दादा, इस तरह हमारा दुःख आपको सौंपा जा सकता है?

दादाश्री : हाँ, हाँ। दादा को ही सबकुछ दे देना और कहना कि 'जा, दादा के पास। यहाँ क्या है? इधर क्या है? सब दे दिया दादा को। अब इधर क्यों आया?'

प्रश्नकर्ता : सुख भी दे देना है?

दादाश्री : नहीं, सुख नहीं। सुख आपके पास रखना है। मुझे सुख का शौक नहीं है, इसलिए आपके पास रखना। आपसे दुःख यदि सहन नहीं हो तो मेरे पास भेज देना। दो-पाँच बार दुःख का अपमान करो कि 'इधर क्यों आया है? दादा को दे दिया है।' तब फिर वह खड़ा नहीं रहेगा। इस *पुद्गल* (अहंकार) का गुण कैसा है कि अपमान हो तो खड़ा नहीं रहता।

जो 'दादा भगवान' हैं, वे अचिंत्य चिंतामणि हैं। जैसा चिंतन करे वैसा (खुद) हो जाता है। मुश्किल में उनका चिंतन करो तो मुश्किलें सब चली जाती हैं। जैसा चिंतन वैसा फल देते हैं। फिर हमें किसलिए घबराने की ज़रूरत है?

प्रश्नकर्ता : दादा, आप से जो माँगो वह मिलता है, ऐसा कहते हैं।

दादाश्री : जो माँगते हैं, वह मिलता है। यदि वह कहे कि 'मेरा दर्द दूर कर दो', तो उसे दूर कर देते हैं।

प्रश्नकर्ता : तो दूर कर दो न।

दादाश्री : नहीं, वह तो आपको कहना चाहिए। आप वहाँ घर पर बैठे-बैठे कहो तो भी हम तक पहुँच जाता है, यहाँ।

प्रश्नकर्ता : दादा भगवान मेरा दुःख दूर कर दो, ऐसा कहना है।

हीरा बा : हाँ, कहना है न।

दादाश्री : नहीं, वह तो पाँच-दस मिनट ऐसा बोलना चाहिए। सिर्फ बात करने से नहीं होता। इसीलिए तो लोग, 'दादा भगवान के असीम जय जयकार', बोलते हैं न! इसीलिए उनका सब दूर हो जाता है। सबकुछ होता है, जो माँगा हो वह मिलता है। इसीलिए तो सब बोलते हैं। इसलिए मैं भी बोलता हूँ न!

सांसारिक अड़चन आए तो 'चंदूभाई' से कहना कि त्रिमंत्र बोलो। फिर 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' बोलो। तो सारी परेशानियाँ उनके अपने घर चली जाएँगी।

प्रश्नकर्ता : 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' बोलें, उसमें एकाकार हो जाए तो कई दुःख कम हो जाएँगे न?

दादाश्री : अनंत जन्मों के दुःख कम हो जाएँगे। एकाकार नहीं बल्कि अभेदता हो गई! संसार में व्यावहारिक अभेदता होती है स्त्री और पुरुष के बीच, लेकिन जब दोनों आपस में लड़ें तब? और दादाजी के साथ तो निश्चय की अभेदता उत्पन्न होती है। इसलिए दादाजी की जो मिल्कियत है, वही आपकी मिल्कियत हुई।

'दादा भगवान के असीम जय-जयकार' बोलो तो, वह कीर्तन करते हैं। जो भगवान हैं उनका कीर्तन करते हैं। नक़द, दिस इज़ द कैश बैंक ऑफ डिवाइन सॉल्यूशन! ऐसा कैश बैंक कभी भी नहीं खुला।

जय सच्चिदानंद

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में सत्संग कार्यक्रम

अडालज

10 अगस्त (शनि) - **सत्संग** शाम 5 से 7 और **11 अगस्त** शाम 4 से 7-30 (रवि) - **ज्ञानविधि**

26 अगस्त (सोम) - रात 10 से 12-15 - **जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष भक्ति कार्यक्रम**

31 अगस्त से 7 सितम्बर (शनि से शनि) - **आप्तवाणी 14 भाग-4 पर सत्संग पारायण**

नोट : आप्तवाणी-14 भाग-4 गुजराती बुक के पेज नंबर 19 से वाचन होगा. (हिन्दी-अंग्रेजी में ट्रान्सलेशन उपलब्ध रहेगा.)

सूचना : रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। रजिस्ट्रेशन की अधिक जानकारी **Akonnect** ऐप के द्वारा दी जाएगी.

8 सितम्बर (रवि) - **पूज्यश्री के दर्शन का कार्यक्रम** (गुरुपूर्णिमा के दर्शन)

बेंगलुरु

15 अगस्त (गुरु) सुबह 11 से 1 - **आप्तपुत्र सत्संग** और **15 अगस्त** (गुरु) शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि**

स्थल : प्रिंसेस श्राईन, गेट नंबर 9, पैलेस ग्राउंड्स, मेकरी सर्कल, बेल्लारी रोड़, बेंगलुरु. **संपर्क :** 9590979099

दक्षिण भारत शिविर - 16 से 18 अगस्त

नोट : केवल कर्नाटक, तेलंगाना, तमिल नाडु, आंध्र प्रदेश, केरल और गोवा के महात्माओं के लिए.

स्थल : आचार्य श्री तुलसी महाप्रज्ञ चेतना केंद्र, कुंबलगोडु, बेंगलुरु-मैसूर हाईवे, कर्नाटक. **संपर्क :** 9590979099

जयपुर

20-21 अगस्त (मंगल-बुध) शाम 5-30 से 8-30 - **सत्संग** और **22 अगस्त** (गुरु) शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि**

स्थल : बिड़ला ऑडिटोरियम, स्टेच्यू सर्किल, सी स्कीम, रामबाग, जयपुर. **संपर्क :** 8233363902

पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत

- **'साधना'** पर हर रोज़ सुबह 7-50 से 8-15 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन उत्तरप्रदेश'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 और दोपहर 3 से 4 (हिन्दी में)
- **'आस्था'** पर हर रोज़ रात 10 से 10-20 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन सह्याद्रि'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-45 (मराठी में)
- **'दूरदर्शन सह्याद्रि'** पर हर रोज़ दोपहर 3-30 से 4 सोम से शुक्र और शनि-रवि दोपहर 11-30 से 12
- **'आस्था कन्नड़ा'** पर हर रोज़ दोपहर 12 से 12-30 तथा शाम 4-30 से 5 (कन्नड़ा में)
- **'दूरदर्शन चंदना'** पर हर रोज़ शाम 6-30 से 7 (कन्नड़ा में)
- **'धर्म संदेश'** पर हर रोज़ सुबह 2-50 से 3-50, दोपहर 2-30 से 3 तथा रात 8 से 9 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन गिरनार'** पर रोज़ सुबह 7-30 से 8-30, रात 9-30 से 10-30 (गुजराती में)
- **'वालम'** पर हर रोज़ शाम 6 से 7 (सिर्फ गुजरात राज्य में) (गुजराती में)

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **मुंबई :** 9323528901, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9924341188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा :** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687, **भावनगर :** 9313882288, **अहमदाबाद (दादा दर्शन) :** 9574001445, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली :** 9810098564, **बैंगलूर :** 9590979099, **कोलकता :** 9830080820 **यु.एस.ए.-केनेडा:** +1 877-505-3232, **यु.के.:** +44 330-111-3232, **ऑस्ट्रेलिया:** +61 402179706

बिलीमोरा

सत्संग-ज्ञानविधि : ता. 15-16 मई 2024

अडालज

PMHT (पेरन्ट्स महात्मा) शिविर : ता. 22 से 26 मई 2024

अडालज

हिन्दी शिविर : ता. 5 से 9 जून 2024

अडालज

आपत्संकुल में भक्ति : ता. 12 जून 2024

जुलाई 2024
वर्ष-19 अंक-9
अखंड क्रमांक - 225

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Licensed to Post Without Pre-payment
No. PMG/NG/036/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

दादाई ब्लैंक चेक कब इस्तेमाल करें?

ये 'दादा' एक ऐसे निमित्त हैं, जैसे ही दादा का नाम लो, तो बिस्तर से उठ-बैठ न पा रहे हों फिर भी खड़े हो जाते हैं। आपको जो काम करना हो वह हो जाए ऐसा है, लेकिन उसमें नीयत खराब नहीं रखना। किसी के वहाँ शादी में जाने के लिए शरीर स्वस्थ हो जाए, ऐसा मत करना। यहाँ सत्संग में आने के लिए शरीर स्वस्थ रहे, ऐसा माँगना। यानी, दादा का उपयोग अच्छे कामों के लिए करना। उसमें फिर दुरुपयोग नहीं होना चाहिए। क्योंकि दुरुपयोग नहीं होगा तभी वे दादा मुश्किलों के टाइम में काम आएँगे। इसलिए आपको उनका व्यर्थ में ही उपयोग नहीं करना है। यानी, दादा का तो यह ब्लैंक चेक, कोरा चेक कहलाता है। इसे बार-बार भुनाने जैसा नहीं है, कोई बड़ी परेशानी आए, तभी संकट समय की ज़ंजीर खींचना। सिगरेट का पैकेट गिर जाए और आप गाड़ी की संकट समय की ज़ंजीर खींचें तो जुर्माना लगेगा या नहीं लगेगा?

-दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner.
Printed at Amba Multiprint, Opp. H B Kapadiya New High School, Chhatral - Pratappura Road,
At - Chhatral, Tal : Kalol, Dist. Gandhinagar – 382729.